P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-5*January-2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

साहबज़ादा सआदत अली खाँ उर्फ छम्मन साहब द्वारा रचित संगीत ग्रन्थों का अध्ययन

सारांश

साहबज़ादा सआदत अली खां उर्फ 'छम्मन साहब' द्वारा दो संगीत ग्रन्थों की रचना की गई, (1) फलसफाऐ मौसिकी, (2) रहनुमाऐ हारमोनियम। ये दोनों ग्रन्थ उर्दू भाषा में लिखित हैं, तथा उत्तर प्रदेश के रुहेलखण्ड क्षेत्र के रामपुर ज़िले की रज़ा लाइब्रेरी में इनकी पाण्डुलिपि सुरक्षित रखी गई हैं। छम्मन साहब संगीतविद् थे, इसका अनुमान इनके ग्रन्थों का अध्ययन कर लगाया जा सकता है। फलसफाये मौसिकी में 11 अध्याय हैं, जिसमें संगीत सम्बन्धी अनेक जानकारियाँ उपलब्ध हैं। रहनुमाऐ हारमोनियम में हारमोनियम व प्यानो को बजाने की विधि का वर्णन किया गया है। साथ ही विभिन्न रचनाओं की स्वरलिपि भी उपलब्ध हैं। इन ग्रन्थों के अध्ययन से उपलब्ध संगीत सम्बन्धी जानकारी निःसन्देह उपयोगी है।

मुख्य शब्द : रज़ा लाइब्रेरी रामपुर, सात स्वर, 22 श्रुति, सप्तक, पाश्चात्य स्वरलिपि, (Western Notes)

अंकिता
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
संगीत गायन विभाग,
राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
रामपुर, उ0प्र0

प्रस्तावना

संगीत सम्बन्धी अध्ययन नित नवीन जानकारी उपलब्ध कराता है। सआदत अली खां उर्फ 'छम्मन साहब'' द्वारा रचित संगीत ग्रन्थों का अध्ययन उसी श्रृंखला की एक कड़ी है। संगीत में रुचि रखने वाले व संगीत की गहराई को समझने वाले अनेक संगीतविद् रहे हैं जिन्हें आज की युवा पीढ़ी अर्थात् संगीत विद्यार्थी नहीं जानते। साहबज़ादा सआदत अली खां उर्फ ''छम्मन साहब'' उत्तर प्रदेश के रुहेलखण्ड क्षेत्र की रामपुर रियासत के सातवें नवाब यूसुफ अली खां के पौत्र व नवाब हैदर अली खां के ज्येष्ठ पुत्र थे। आपका जन्म 22 अगस्त सन् 1878 ई0 में हुआ था। बाल्यकाल से ही आपको संगीत में रुचि थी। छम्मन साहब ने तानसेन के पुत्र वंशज उस्ताद मुहम्मद अली खां (गिधौर वाले) से सुरसिंगार वादन की शिक्षा प्राप्त की। आपके सम्बन्ध में यह किंवदन्ती प्रचलित है कि ''साहबजादा छम्मन साहब को विभिन्न रागों के सत्रह सौ होरी धुवपद याद थे। ये सुरसिंगार बजाते थे। ये कई भाषाओं के पण्डित और मेधावी व्यक्ति थे।[1] साहबज़ादा छम्मन साहब एक कुशल रचनाकार भी थे। छम्मन साहब द्वारा रचित दो ग्रन्थों से उनकी जिज्ञासु प्रवृत्ति का पता चलता है। छम्मन साहब के संगीत सम्बन्धी दो ग्रन्थों के नाम क्रमशः इस प्रकार हैंः–

(सा) फ़लसफाये मौसिकी
(रे) रहनुमाऐं हारमोनियम

फलसफाये मौसिकी

फलसफाये मौसिकी अल मारूफ नग़मये सआदत अली खां (संगीत का दर्शन) नामक ग्रन्थ का केवल एक ''स्वराध्याय'' ही प्रकाशित है। इस ग्रन्थ में कुल 11 अध्याय हैं, जिनमें संगीत की चर्चा की गई है।

रहनुमाऐं हारमोनियम

इस ग्रन्थ में हारमोनियम एवं पियानो बजाने की विधि वर्णित है तथा अनेक सरगम, दादरा एवं ठुमरी स्वरलिपि सहित हैं।

यह दोनों ग्रन्थ उर्दू भाषा में लिखित हैं। इनकी पाण्डुलिपि उत्तर प्रदेश के रामपुर ज़िले की रज़ा लाइब्रेरी में उपलब्ध है। संभवतः उर्दू भाषा में लिखित होने के कारण इन ग्रन्थों में वर्णित संगीत सम्बन्धी सामग्री की ओर किसी का ध्यान नहीं जा सका। दोनों ग्रन्थों के अनुवाद के उपरान्त उससे प्राप्त जानकारी को उपयोग में लाया जा सकेगा।

पं0 भातखण्डे जी ने छम्मन साहब को अपना मित्र एवं गुरु कहा है और स्वीकार किया है कि उत्तर भारत के रागों के भेद छम्मन साहब की कृपा से ही समझ में आए हैं।[2]

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-5*January-2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

उद्देश्य

साहबजादा छम्मन साहब द्वारा रचित संगीत ग्रन्थों में वर्णित संगीत सम्बन्धी सामग्री को सर्वसुलभ कराना ।

शोध प्रविधि

उपरोक्त ग्रन्थों का हिन्दी अनुवाद किया गया।

परिणाम

फलसफाये मौसिकी

साहबज़ादा सआदत अली खां उर्फ ''छम्मन साहब'' द्वारा रचित यह ग्रन्थ 11 अध्यायों में विभाजित है।

प्रथम अध्याय

सुर और आवाज़ का अन्तर और सुर की परिभाषा

साहबज़ादा छम्मन साहब के अनुसार सुर एक निश्चित और अच्छी आवाज़ है जो अपनी श्रुतियों को लेकर निकलती है और श्रोताओं को प्रसन्नचित्त करती है। आवाज़ यदि इधर उधर हटेगी तो उसमें सन्तुलन नहीं रहेगा। इस स्थिति में वो मौसिकी अर्थात् संगीत के उपयोगी नहीं रहेगी। तात्पर्य यह है कि सुर अच्छी आवाज़ और कायम का नाम है।[3]

द्वितीय अध्याय

सुर के स्थान

सुर के तीन स्थान माने हैं मन्द्र, मध्य एवं तार। साहबज़ादा छम्मन साहब ने इसको निम्न तालिका द्वारा स्पष्ट किया है–

(अ) मन्द्र स्थान	(ब) मध्य स्थान	(स) तार स्थान
खरज सा सीने से निकलने का स्थान	दुगुन सा गले से निकलने का स्थान	तिगुन सा दिमाग से निकलने का स्थान

'अ' सुर का वो नीचा स्थान है, जिसके बाद कोई अन्य स्थान नहीं है। ये ऊँचाई के कारण आवाज़ 'ब' का आधा है। जिससे पहले का स्थान का नाम ''खरज'' रखा गया। 'अ' से लेकर 'ब' तक एक सप्तक हुआ। इसी प्रकार 'ब' से लेकर 'स' तक दूसरी सप्तक और 'स' से आगे तक तीसरी सप्तक हुयी। साढ़े तीन सप्तक के आगे आवाज़ नहीं जा सकती और ना इस स्थान को कोई गा सकता है अगर कोई कहे कि गा सकता है तो मैं कहूँगा कि गाना न हुआ, गला फाड़ना हुआ। इन नियमों कों ध्यान में रखते हुए समस्त बाजों में तीन सप्तक ही रखी गयी हैं।[4]

तृतीय अध्याय

श्रुतियों का बयान

इस अध्याय में श्रुतियों का वर्णन करते हुए कहा है कि मन्द्र, मध्य और तार प्रत्येक स्थान पर 22–22 नाड़ियां हैं। जो हवा सीने में आती हैं; वो 22 नाड़ियों में होकर आती हैं और प्रत्येक नाड़ी से आवाज़ आती है वो ''श्रुति'' है। श्रुतियों का एकत्र होना ही स्वर है। स्वर जिस समय गले से निकाला जाता है शुद्ध उसी समय होगा जब वो अपनी समस्त श्रुतियों को लेकर निकलेगा। अगर उसमें श्रुति कम होगी; तो वह शुद्ध ना होगा बल्कि विकृत होगा।[5]

चतुर्थ अध्याय

श्रुतियों की जात

आपके द्वारा श्रुतियों की पाँच जाति मानी गई हैं जिनके नाम हैं (1) दीप्ता (2) आयता, (3) करुणा, (4) मृदु, (5) मध्या। दीप्ता का अर्थ है 'रोशनी', आयता का अर्थ है 'चौड़ा होना', करुणा का अर्थ है 'दयालु', मृदु का अर्थ है 'नरम एवं मुलायम' तथा मध्या का अर्थ है 'ना कठोर ना नरम'।

प्रत्येक श्रुति की कौम

साहबज़ादा छम्मन साहब के अनुसार प्रत्येक श्रुति की निम्नवत् जाति इस प्रकार है।

दीप्ता जाति		आयता जाति		करुणा जाति		मृदु जाति		मध्या जाति	
स्वर	श्रुतियां	स्वर	श्रुतियां	स्वर	श्रुतियां	स्वर	श्रुतियां	स्वर	श्रुतियां
सा	तीव्रा	सा	कुमुद्वति	रे	दयावती	सा	मंदा	सा	छंदोवति
ग	रौद्री	ग	क्रोधा	प	अलापिनी	रे	रक्तिका	रे	रंजनी
म	वज्रिका	म	प्रसारिणी	ध	मदंती	म	प्रीति	म	मार्जनी
नी	उग्रा	प	संदीपनी			प	क्षिति	प	रक्ता
		ध	रोहिणी					ध	रम्या
								नि	क्षोभिणी

पंचम अध्याय

सुर के बयान में

आपके अनुसार प्रत्येक सुर की परिभाषा इस प्रकार है–

खरज

अर्थात् षडज; जोकि 'षड' और 'ज' के योग से बना है, षड का अर्थ 'छः' है और 'ज' का अर्थ पैदा करने वाला। इस प्रकार षडज का अर्थ ''छः' स्वरों को पैदा करने वाले से है क्योंकि ये स्वर नाक, गला, सीना, तलुआ, नाभ से निकला है। इसलिए इसका नाम षडज हुआ।

रखब 'रे'

अर्थात् ऋषभ। खरज के बाद सब स्वरों से पहले आने वाला और दूसरा अर्थ है जिसकी आवाज़ बड़ी हो।

गंधार ''गा''

गांधार में ''गां'' गाने वाली आवाज़ को कहते हैं ''धार'' का अर्थ है लेने वाला अर्थात् रखब के बाद गाने की आवाज को लेने वाला।

मध्यम 'म'

जिसका अर्थ है मध्यम क्योंकि ये स्वरों के बीच है।

पंचम 'प'

दो शब्दों के योग से बना है। 'पंच' और 'म'। 'पंच का अर्थ है ''फैलाना'' और 'म' का अर्थ है 'करने वाला'। अर्थात् फैलाकर गाने वाला।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-5*January-2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

धैवत 'ध'

''धै'' का अर्थ 'अक्ल' और 'वत' का अर्थ अक्ल वाला।

गहन अध्ययन से ज्ञात हुआ कि इसका नाम बुद्धि वाला इसलिए रखा गया कि इसका स्थान छटा है अर्थात् दिमाग। जो कि बुद्धि का स्थान है।

नखाद ''नि''

अर्थात् निषाद। इसका अर्थ है समाप्त करने वाला, क्योंकि यह अंतिम सुर है। इस कारण इसका नाम यह हुआ।

सप्तक या स्थान

प्रत्येक सप्तक या स्थान पर यही सातों स्वर हैं और आगे वाला स्थान अपने पीछे वाले स्थान से दुगना है। हिन्द के संगीतज्ञों की यह राय है कि इन सात स्वरों को सात पक्षियों की आवाजों से निकाला है–

1. खरज : खरज को मोर की आवाज से
2. रखब : रखब को पपीहे की आवाज से
3. गंधार : गंधार को बकरी की आवाज से
4. मध्यम : मध्यम को सारस की आवाज से
5. पंचम : पंचम को कोयल की कुहू–कुहू से
6. धैवत : धैवत को मेंढक की आवाज से।
7. निषाद : निषाद को हाथी की चिंघाड़ से[7]

षष्टम अध्याय

सुरों के वंश, देवता, जाति, वर्ण आदि का बयान

छम्मन साहब द्वारा वंश, जाति, वर्ण, देवता आदि का निम्नवत् वर्णन किया गया है–

वंश

खरज, गंधार, मध्यम देवताओं के वंश से हैं। पंचम पितृ के वंश से हैं। रखब, धैवत ऋषि के वंश से हैं और नखाद असुर के वंश से है।

स्वरों की जाति

खरज, मध्यम, पंचम स्वरों की जाति 'ब्राह्मण' रखब और धैवत स्वरों की जाति क्षत्रिय, नखाद और गंधार की जाति वैश्य और अंतर काकली की जाति ''क्षूद्र'' मानी है।[8]

स्वरों के रंग और इसके देवता

खरज का रंग 'लाल' और अग्नि देवता है।
रखब का रंग 'पिंजरा' और ब्रह्मा देवता हैं।
गंधार का रंग 'पीला' और सरस्वती देवता हैं।
मध्यम का रंग 'सफेद' और विष्णु जी देवता हैं।
पंचम का रंग 'काला' और महादेव जी देवता हैं।
धैवत का रंग 'नारंगी' और गणेश जी देवता हैं।
निषाद का रंग 'बक्सा' और सूर्य देवता स्वीकार किए गए हैं।[9]

स्वरों के रस

खरज, रखब का रस 'वीर ' और 'अद्भुत' है।
ध्योत अर्थात धैवत का रस 'रौद्र' है।
गंधार; नखाद का रस 'वीभत्स' और 'भयानक' है।
मध्यम, पंचम का रस 'करुण', 'हास्य' और 'श्रृंगार' है।[10]

सप्तम अध्याय

विकृत सुरों के बयान

साहबज़ादा छम्मन साहब ने इस अध्याय में सर्वप्रथम पं0 अहोबल कृत 'संगीत पारिजात'; पं0 शारंग्देव कृत 'संगीत रत्नाकर' महाराज तुलाजीराव भौंसले कृत 'संगीत सारामृत' के वर्णित शुद्ध व विकृत स्वरों का विस्तार में वर्णन करते हुए आलोचना प्रस्तुत की है।

शब्दकोष में स्वर के घटने बढ़ने को विकृत कहते हैं। निश्चित है कि घटाव–बढ़ाव के दो ही स्थान हो सकते हैं या तो स्वर घट कर पीछे की तरफ हटेगा या आगे बढ़ेगा। कोई स्वर जो अपनी सीमा से आगे बढ़ेगा तो वो वह स्वर न रह कर दूसरा स्वर बन जायेगा। इस प्रकार से यह स्पष्ट है कि हम स्वरों को बढ़ा नहीं सकते बल्कि घटा सकते हैं। स्वर के घटे हुए दरज़े बहुत हो सकते हैं। हम स्वरों को पाँच दरज़े तक घटा सकते हैं। पहले दरज़े का नाम 'सकारी' है। दूसरे दरज़े का नाम 'अति कोमलतम' है, तीसरे दरज़े का नाम भी 'अति कोमल तर' है। चौथे दरज़े का नाम 'अति कोमल' और पांचवे दरज़े का नाम 'कोमल है।

साहबज़ादा छम्मन साहब के अनुसार तीव्र कोई दरज़ा नहीं है केवल कोमल दरज़ा है। आपके अनुसार प्रत्येक स्वर से पांच–पांच स्वर प्राप्त किए जा सकते हैं। जिसमें खरज और पंचम अचल हैं। अतः इनसे विकृत स्वर प्राप्त किए जा सकते हैं। अतः पांच शुद्ध स्वरों से 25 कोमल स्वर प्राप्त किए जा सकते हैं और सात शुद्ध स्वर मिलाकर कुल 32 स्वर होते हैं और इन्हीं स्वरों पर समस्त राग रागिनियां निर्भर करती हैं।

इस समय के संगीतकार 12 स्वर मानते हैं। सात शुद्ध और पांच विकृत। विकृत, रखब; विकृत गंधार; विकृत मध्यम; विकृत धैवत; विकृत निषाद। मध्यम के सम्बन्ध में यह राय है कि यह उतरता नहीं, सिर्फ चढ़ता है।

अष्टम अध्याय

वादी संवादी की बहस

आपके द्वारा स्वरों को चार प्रकारों में बांटा गया है वादी, संवादी, अनुवादी, और विवादी, जिनकी परिभाषा निम्नवत् है–

वादी

वादी वह स्वर है जो कि वमन ज़िलयेबादशाह होता है अर्थात् राजा होता है यदि यह स्वर राग से निकाल दिया जाए तो, फिर इसकी पहचान नहीं हो सकती।

संवादी

संवादी वह स्वर होता है जो वमन ज़िलयेवजीर हो अर्थात मंत्री।

अनुवादी

अनुवादी वह स्वर है जो वमन ज़िलयेसाहब हो।

विवादी

यह स्वर वमन ज़िलयेदुश्मन है अर्थात् जो राग सौन्दर्य को नष्ट करता हो, बिगाड़ता हो।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-5*January-2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

नवम अध्याय

ग्राम के बयान से

ग्राम का शाब्दिक अर्थ है –गाँव। साहबज़ादा छम्मन साहब ने ग्राम का अर्थ 'सुरों का एक स्थान पर एकत्र होना' बताया है। आपके अनुसार केवल स्वर ही नहीं मूर्च्छना, तान, अलंकार और वर्ण आदि भी एक स्थान पर एकत्र हो जाते हैं। अतः आपने इनका नाम 'ग्राम' रखा है। ग्राम के तीन प्रकार माने हैं– षड़ज ग्राम, मध्यम ग्राम, गंधार ग्राम।

साड़ज ग्राम को 'ग्रामों का सरदार' कहा गया है।[11]

दशम अध्याय

आरोह अवरोह का बयान

आपके अनुसार सप्तक सा, रे, ग, म, प, धा, नी, सा हैं। अगर 'सा' से लेकर 'नी' तक स्वर भरते हुए जाएं तो इस अमले मौसिकी को आरोह कहते हैं। 'अवरोह' वह है कि तार की खरज से सिलसिलेवार फिर खरज पर आ जाए, इस शब्द का अर्थ –नीचे उतरना' है।

एकादश अध्याय

मूर्च्छना का बयान

साहबज़ादा छम्मन साहब के अनुसार स्वरों के आरोह अवरोह में सात–सात स्वर हों और एक स्वर दूसरे स्वर तक के अन्तर को इस प्रकार भरे कि कोई दूसरा स्वर पैदा हो। यहाँ तक कि दूसरे स्वर तक पहुँच जाए। इसकी यह गति रंगीन हो और स्वर में रूखापन न होने पाए मूर्च्छना कहलाता है। हर स्वर की एक मूर्च्छना होती है अतः तीनों ग्रामों की 21 मूर्च्छना हुईं।

आपके अनुसार विकृत स्वर 25 हैं। हर एक के सात प्रकार मानने से 157 मूर्च्छना हुईं।

रहनुमाये हारमोनियम

साहबज़ादा सआदत अली खां उर्फ 'छम्मन साहब'' द्वारा रचित 'रहनुमाए हारमोनियम' ग्रन्थ की रचना हारमोनियम और प्यानो के वादन विधि से सम्बन्धित है।

इस ग्रन्थ में हारमोनियम बजाने की विधि का सविस्तार वर्णन किया है, उन्होंने लिखा है कि इन दोनों वाद्यों को किस प्रकार बजाया जाए।

सरगम में सम्पूर्ण शब्द नहीं लिखे जा सकते इसलिए इन स्वरों को संक्षिप्त करके प्रत्येक शब्द का पहला नाम ले लिया, उदाहरणार्थ– षड़ज का 'सा', रिषभ का 'रे', गंधार का 'ग', मध्यम का 'म', पंचम का 'प', धैवत का 'ध', निषाद का 'नी'।

हारमोनियम और प्यानो में 'सा' पहले पर्दे को माना है और यहीं से पहला पर्दा आरम्भ है जिससे 'नेचुरल स्केल' बनायी गई उसे 'बिलावल का ठाठ' कहते हैं। हारमोनियम का चौथा सफेद पर्दा है और जो पहले पर्दो की तरह शुद्ध या कोमल मध्यम है। उसको आपने 'सा स्वर' स्थापित किया अर्थात् ''सा'' से समस्त राग रागिनियां उंगलियों की कठिनाई के बिना बजाई जा सकती हैं।

आपके अनुसार राग रागिनी तीन प्रकार की होती हैं–

1. जिसमें सब स्वर तीव्र अर्थात् चढ़े हों उसे अंग्रेजी में फुलटोन कहते हैं। इसके लिए आपने अपनी स्केल में सफेद पर्दे स्थापित किए और उन्हें चिन्ह 't' बताया।
2. जिसमें सब स्वर उतरे हों, उसको अंग्रेजी में सेमीटोन कहते हैं। हारमोनियम में इन काले पर्दों को उतरे स्वर समझना चाहिए। आपने उसका चिन्ह 'क' बताया है।
3. जिसमें राग रागिनियां उतरें और चढ़ें दोनों स्वर हों, इसके लिए आपने कोई चिन्ह नहीं बताया। जैसा स्वर उस रागिनी में होगा वैसा चिन्ह दिया जाएगा।[12]

आपने स्टाफ नोटेशन (पाश्चात्य स्वरलिपि पद्धति) में अपनी अनेक स्वरलिपियों की रचना की। आपका मानना था कि स्टाफ नोटेशन से हिन्दुस्तानी गाने–बजाने वाले यूरोप के गाने–बजाने को समझेंगे और यूरोप वाले हमारे गाने–बजाने को समझ लेंगे। छम्मन साहब की कुछ पाश्चात्य स्वरलिपियों को उदाहरण निम्न प्रकार हैं।

अलंकार[13]
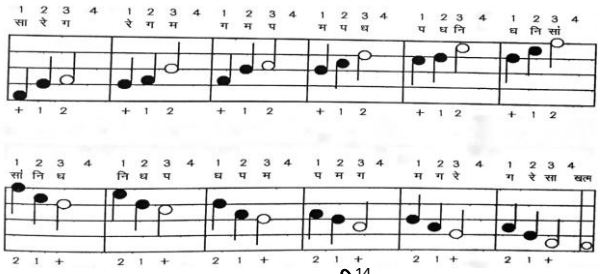
दादरा राग धानी[14]

स्थाई

नजर भरा मारा रे
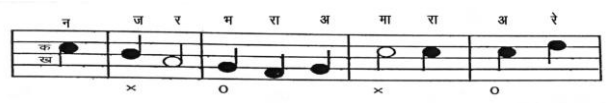
अन्तरा

एक तो गोरी नैना रसीले
दूजे करती इशारा रे
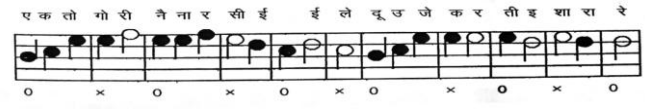
निष्कर्ष

इस प्रकार साहबज़ादा छम्मन साहब द्वारा रचित संगीत ग्रन्थों ''फलसफाये मौसिकी'' एवं ''रहनुमाएं हारमोनियम'' के अध्ययन से संगीत सम्बन्धी जानकारी प्राप्त की गई। साथ ही यह भी ज्ञात हुआ कि नवाब हैदर अली के पुत्र साहबजादे सआदत अली खां उर्फ ''छम्मन साहब'' संगीत, साहित्य एवं कलाप्रेमी थे। प्रयोगात्मक पक्ष के साथ–साथ शास्त्र पक्ष के भी अच्छे ज्ञाता थे। आपका शास्त्र पक्ष आज के संगीत शास्त्र से कुछ भिन्न है। उपरोक्त ग्रन्थों की रचना कर आपने संगीत शिक्षा आम जनता को सर्वसुलभ करायी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *साहबज़ादा अशफाक अली खां उर्फ ''जानी साहब'', नग़मातुलहिन्द, पृ0 4*
2. *सरयू कालेकर, रामपुर की सदारंग परंपरा और प्रतिनिधि आचार्य बृहस्पति, पृ0 82*
3. *साहबज़ादा छम्मन साहब,फलसफाये मौसिकी, पृ0 14*
4. *साहबज़ादा छम्मन साहब,फलसफाये मौसिकी, पृ0 15*
5. *साहबज़ादा छम्मन साहब,फलसफाये मौसिकी, पृ0 18*
6. *साहबज़ादा छम्मन साहब,फलसफाये मौसिकी, पृ0 22*
7. *साहबज़ादा छम्मन साहब,फलसफाये मौसिकी, पृ0 26*
8. *साहबज़ादा छम्मन साहब,फलसफाये मौसिकी, पृ0 26*
9. *साहबज़ादा छम्मन साहब,फलसफाये मौसिकी, पृ0 29*
10. *साहबज़ादा छम्मन साहब,फलसफाये मौसिकी, पृ0 31*
11. *साहबज़ादा छम्मन साहब,फलसफाये मौसिकी, पृ0 49*
12. *साहबज़ादा छम्मन साहब,रहनुमाऐ हारमोनियम, पृ0 6*
13. *साहबज़ादा छम्मन साहब,रहनुमाऐ हारमोनियम, पृ010*
14. *साहबज़ादा छम्मन साहब,रहनुमाऐ हारमोनियम, पृ035*